दो मुंह वाला सांपः कोरी भ्रांति

नरेन्द्र देवांगन

दो मुंह वाले सांप के बारे में अनेक किंवदंतियां प्रचलित हैं। मजमा लगाते समय इन्हें सपेरे बड़े ही रहस्यमय ढंग से सुनाते हैं। दोमुंहे सांप प्रायः सभी सपेरों के पास होते हैं। वे कहते हैं कि ये सांप वर्ष में छः महीने एक मुंह इस्तेमाल करते हैं और छः महीने दूसरा।

सामान्य सांपों की तरह दोमुंहे सांप की पूंछ पतली और नुकीली न होकर मुंह की तरह मोटी और गोल होती है। इसका फायदा उठाकर सपेरे दोनों सिरों पर मुंह होने का भ्रम पैदा कर देते हैं। वास्तव में अन्य सांपों की भांति ही इसका भी एक ही मुंह होता है। आंखें अत्यधिक छोटी होने के कारण सामान्यतः पहली नज़र में वे दिखाई भी नहीं पड़तीं। कुछ चतुर सपेरे पूंछ के सिरे पर आंख, मुंह आदि इस खूबी से चित्रित कर देते हैं कि आम दर्शक उसे मुंह समझने की भूल कर बैठता है। वैसे दोनों सिरों को गौर से देखने पर ही असली मुंह का पता चल पाता है।

तथाकथित दोमुंहे सांप की पूंछ कुंद होने के सम्बंध में दो स्पष्टीकरण दिए जाते हैं। एक के अनुसार पूंछ शिकार फंसाने के लिए 'जाल' का काम करती है। शिकार करने के लिए यह सांप रेत में अपने आपको आधा इस प्रकार गाड़ लेता है कि उसकी पूंछ बाहर निकली रहे। देखने में वह किसी वृक्ष की जड़ के ठूंठ के समान प्रतीत होती है। जब कोई चूहा, गिलहरी आदि जीव उसके पास से गुजरते हैं तब यह बिजली की फुर्ती से रेत में से उछलकर शिकार को अपनी कुंडली में कस लेता है।

दूसरी ओर, कुछ लोगों का कहना है कि जब दोमुंहा सांप रेत में गड़ा होता है उस समय उसकी पूंछ को छूने पर वह तेज़ी से बाहर निकलने की बजाय रेत में और अंदर घुसने की कोशिश करता है। इन लोगों के अनुसार पूंछ आत्मरक्षा की युक्ति है। रेत में गड़ी अवस्था में पूंछ पर किसी चीज़ का स्पर्श पाते ही यह जान बचाने के लिए रेत के अंदर छुपने की कोशिश करता है लेकिन जब जान बचाने

में असमर्थ होता है तो अपने शरीर को कुंडली में लपेटकर सिर को छिपा लेता है और पूंछ को खड़ा कर देता है।

विषहीन होने के कारण यह अक्सर सभी सपेरों के पास होता है। इसकी अधिकतम लंबाई 45 से.मी. होती है। इसके मटमैले रंग के बेलनाकार शरीर पर छोटे-छोटे चमकीले शल्क होते हैं।

ज़मीन में शीघ्रता से अंदर प्रवेश कर जाने के लिए इसका थूथन नुकीला होता है। बिलों में रहने वाले अपने शिकार (छोटे स्तनपाइयों) को पकड़ने के लिए, आम तौर से यह उनके बिलों में घुसकर स्वयं को जमीन में गाड़ लेता है। वैसे यह पक्षियों को खाना भी खूब पसंद करता है।

इस सांप के बारे में कदाचित सबसे विचित्र बात यह है कि यह अन्य सांपों की तरह अंडे नहीं देता वरन बच्चे देता है। सपेरों की पिटारियों में दोमुंहे सांप के बच्चे देने के अनेक उदाहरण हैं।

यह बोयडी वंश का सांप है। इसका जीव विज्ञानी नाम *एरिक्स जोहनी* है। इसे *ब्राउन सैंड बोआ* या *जान्स अर्थ स्नेक* भी कहते हैं। यह बिल्कुल भी जहरीला नहीं होता और इसके काटने पर मनुष्य को किसी प्रकार की हानि नहीं होती। वैसे भी सपेरों के अनुसार पकड़ने पर यह न तो काटता है और न चोट करने की कोशिश करता है।

सांपों के बारे में प्रचलित अनेक भ्रांतियों में कदाचित एक आम भ्रांति यह है कि वे गाय का दूध पी जाते हैं। निश्चय ही ऐसा वे गाय की मर्ज़ी के बिना करते हैं। इसके लिए पहले

वे गाय के पिछले पैरों को अपनी कुंडली में लपेट लेते हैं, फिर अपने फन को गाय के थनों में लगाकर उसका दूध पीते हैं। इस भ्रांति को फैलाने में कुछ चालाक ग्वालों ने, स्वार्थवश बहुत योग दिया है। मज़ेदार बात यह है कि सांप द्वारा गाय का दूध पीने से सम्बंधित भ्रांति भारत में ही नहीं, अमेरिका और युरोप के अनेक देशों में भी प्रचलित है। भारत में धामन को दूध पीने वाला सांप माना जाता है। संपेरे तमाशा दिखाते हुए इसे 'भैंस की टांगें बांधकर दूध पीने वाला सांप' बताते हैं। अमेरिका के किसान इसे 'मिल्क स्नेक' समझते हैं। उसका जंतु वैज्ञानिक नाम *लैम्प्रोपेल्टिस ट्राएंगुलम* है।

संसार के सब कथित दूध पीने वाले सांप पतले, लंबे और विषहीन बताए जाते हैं। ये चूहे आदि को खाते हैं। घरों, गोशालाओं तथा खेत-खलिहानों के आसपास रहने वाले चूहे जैसे जीवों को खाने के इरादे से ये इन जगहों पर रहते हैं। सांप स्तनपाई जीव नहीं है और वह अपने फन को गाय के थन में लगाकर दूध नहीं पी सकता। दूध या कोई भी द्रव पीने का उसका तरीका एकदम अलग है।

असल बात यह है कि सांप के कंठ में चूसने की मांसपेशियां होती ही नहीं। दूध पीने के लिए सांप जैसे ही थन को मुंह में डालेगा उसके जबड़े में लगे नुकीले दांतों की छः पंक्तियां थन के कोमल मांस में गड़ जाएंगी। इससे गाय को असहनीय दर्द होगा और दर्द से बिलबिलाती गाय दूध नहीं पिला पाएगी। गाय को प्रसन्न भाव में रखकर ही दुहा जा सकता है। दूध दुहना एक श्रम साध्य कार्य है और इसमें पूरे हाथ की मांस पेशियों का सक्रिय सहयोग होता है। इसके बावजूद भी यदि सांप में दूध चूसने की क्षमता हो तो गाय के पिछले पैरों पर कसे सांप के पेट में कितना दूध जा सकेगा? ***(स्रोत फीचर्स)***